दादी जानकी जी के निमित्त - भोग संदेश (27-03-2026) - मोहिनी दीदी जी द्वारा

सभी का याद प्यार लेते हुए, जब आज बाबा के पास वतन में बाबा ने बुलाया, तो वतन में तो आज बाबा के साथ दादी जानकी, जैसे दोनों साथ में खड़े हैं। और बाबा ने स्वागत किया। हम सभी का बाबा ने वतन में आह्वान भी किया, स्वागत भी किया। कुछ क्षणों के बाद, जब बाबा ने बहुत बहुत प्रेम भरी, शक्तिशाली दृष्टि से मुलाकात की, बाबा के नेत्रों में जो स्नेह और शक्ति की किरणें थीं, वह सारे संगठन, सारे विश्व के सभी बाबा के बच्चों तक पहुँच रही थीं। मेरे को भी बाबा ने जब दृष्टि दी, कुछ क्षणों के लिए जैसे कि स्वयं से ही बहुत Light और Might का अनुभव हो रहा था।

फिर मैंने बाबा को कहा कि आपके लिए, दादी जानकी के लिए और दादी जानकी के सभी साथियों के लिए आज मैं भोग लेकर आई हूँ। तो बाबा ने बहुत प्रेम से भोग स्वीकार किया। उसके बाद बाबा ने कहा कि बच्चे हमेशा सोचते हैं, आह्वान करते हैं, emerge करते हैं दादियों को, बाबा को भी और हर एक दादी को बहुत प्रेम से याद भी करते हैं, उनका आह्वान भी करते हैं, तो ऐसे दृश्य देखा...।

बाबा ने दादी जानकी को पूछा - दादी, आपको सभी बहुत याद कर रहे हैं। तो दादी मुस्कुराई, बोला - मैं भी बहुत याद कर रही हूँ। उसके बाद कुछ क्षणों में दादी ने कहा कि आप लोग हमें आह्वान करते हो और हम आपको आह्वान करते हैं। आप सोचते हो कि दादी यहाँ पर Present हो और दादी यह कहती है कि आप लोग ऊपर Present हो। तो दादी ने कहा है कि देखो, आप हमारे साथी बनो। तो मैं देख रही थी, जब दादी ऐसा कह रही थीं कि साथी बनो। फिर दादी ने कहा कि साथी बनने के लिए ज़रूरी नहीं है कि आप तन छोड़कर के वतन में आओ, लेकिन साथी बनने के लिए मनसा, वाचा और कर्मणा...।

बाबा ने उस पर Add किया कि शुरू से लेकर दादी जानकी का कैसा भी स्वास्थ्य रहा, तो उनको मनसा सेवा का बहुत अभ्यास था। वह सारे विश्व में जैसे मनसा सेवा... तो आप सभी भी अगर हम दादियों का साथ देना चाहते हो, तो अपनी मनसा सेवा को बढ़ाओ। तो मनसा सेवा करते करते आप फ़रिश्ते बनते जाएँगे अर्थात देह से न्यारे, अशरीरी स्थिति में एकदम फ़रिश्ता रूप होता जाएगा। मनसा सेवा करते करते आपका फ़रिश्ता रूप बनेगा। और फिर मनसा सेवा के साथ साथ आपकी जो वाणी होगी, आपका बोलना होगा, उसमें सभी को कई प्रकार के अच्छे अच्छे अनुभव होंगे, Silence का अनुभव होगा, न्यारेपन का अनुभव होगा, कई तरह के अच्छे अच्छे अनुभव होंगे।

फिर कर्मयोग भी अगर करते हैं - जैसे सभी सेवाधारी बहुत कर्मयोग में व्यस्त रहते हैं, तो मनसा, वाणी और फिर जो कर्म है, उसका प्रभाव भी बहुत होगा। बाबा ने कहा - जितना फ़रिश्ते बनते जाते हैं, उतने अथक रहेंगे। नहीं तो आजकल बहुत सेवा है, विस्तार भी बहुत है। तो बाबा ने कहा कि फ़रिश्ते की जो स्थिति है - न्यारा-प्यारा, हल्कापन, तो वह आपको

अथक रखेगी। आप कितना भी कुछ करेंगे, तो भी fresh रहेंगे, हल्के रहेंगे और ऐसा लगेगा कि हम और भी करें। तो एक तो होता है कि यह संकल्प हो और करें, दूसरा योग्यता भी चाहिए और शक्ति भी ज़्यादा चाहिए। तो बाबा ने कहा - विश्व में बेहद है ना। विश्व में तो कितनी आत्माएँ हैं, तो अथक सेवाधारी और बेहद के सेवाधारी। वह सेवा करने के लिए फ़रिश्ते की स्थिति बहुत ज़रूरी है। और जो आज बाबा ने ख़ास कहा कि मनसा सेवा करते करते फ़रिश्ते बनेंगे।

तो कुछ क्षणों के लिए जैसे बाबा, ऐसे दादी थीं, और भी दादियाँ थीं - हम लोगों के साथ यह रूहरिहान कर रहे थे कि वर्तमान समय बच्चों की किस प्रकार की स्थिति हो। सदा हदों से पार रहो, बेहद में रहो और अपने दिल में उदारता भी हो, बहुत बहुत विशाल दिल, बड़ा दिल रखो, तो बेहद की बुद्धि हो, आपका हृदय, दिल सदा ही दातापन का रहे। तो बाबा कहते हैं - यह दोनों विशेषताएँ वर्तमान समय बहुत ज़रूरी हैं।

फिर उस पर बाबा ने आज कहा कि जैसे दादी जानकी शक्ति स्वरूप थी, पर उतना ही उनके दिल में रहमभाव बहुत था। हमेशा हर एक को - अगर किसी में कोई छोटा–मोटा संस्कार है या कमजोरी है, तो दादी का ध्यान हमेशा किसी के भी संस्कार पर नहीं जाता था, परंतु उनकी विशेषताओं की तरफ़ जाता था। बाबा कह रहे थे - दादी हर एक की सदा विशेषता देखती और दृष्टि देते देते, उसकी जो विशेषता है, उसको खुद भी पता चले, महसूस करे कि मैं विशेष आत्मा हूँ, मेरा विशेष पार्ट है। तो जब यह अनुभव होगा, बाबा ने कहा जैसे कि सारा परिवार विशेष आत्माओं का ही है, महान आत्माओं का ही है।

तो बाबा आज हम सभी को कह रहे थे कि आओ, हमारे साथ वतन में सेवा करो। तो पहले तो मेरे को लगा - वतन में कैसे सेवा करेंगे? फिर जैसे जैसे बाबा रूहरिहान कर रहे थे, तो बाबा ने कहा - बच्चे, एक ऐसा समय आएगा अभी जल्दी में, जिसमें दो बातें होंगी। एक तो जो उपलब्धियां है या Facilities है, जो साधन हैं, धीरे धीरे वह साधन कम होते जाएँगे। दोनों तरह से - मनुष्य के द्वारा भी और प्राकृतिक आपदाएँ भी। क्योंकि मनुष्य का जो स्वभाव है, प्रकृति है, उसमें ईर्ष्या, द्वेष, बदला लेने की भावना, अहंकार - यह बढ़ता जा रहा है। तो जो प्रकृति के आपको साधन और सुविधाएँ हैं, जिससे शरीर की भी पालना होती है, कम होते जाएँगे। जिसको कहते हैं ना Diminish - धीरे धीरे, धीरे धीरे, नहीं होंगे ज़्यादा। क्योंकि विनाश कोई इस तरह से नहीं - जैसे लड़ाई हो रही है, वैसे नहीं, परंतु उसका दूसरा तरीका यही होगा, जो बाबा ने कई बार पहले भी मुरली में भी कहा हैं - कुछ मिलेगा नहीं आपको, हाथ में हीरे भी होंगे, तो अनाज नहीं मिलेगा। तो बाबा ने कहा - ऐसी परिस्थिति आज का मनुष्य अपनी स्थिति से create कर रहा है। परंतु बाबा ने आप बच्चों को कहा - निर्भय रहो, सोचो नहीं, चिंता की कोई बात नहीं है। आप लोगों की न केवल जो आवश्यकता है वह पूरी होगी, परंतु सेवा के भी साधन आपको और मिलते रहेंगे। ज़्यादा से ज़्यादा आपको programmes मिलेंगे, जैसे हर एक यह चाहेगा कि आप संदेश दो, विश्व शांति के बारे में आप कुछ बताओ। तो आप लोगों के

स्वरूप से, आप लोगों के चेहरे से बहुत बहुत सेवा अभी होनी है। बेशक सेवा का विस्तार है, पर अभी भी बहुत सेवा है।

और उस सेवा के लिए बाबा ने कहा - आपका स्वरूप शांति, प्रेम, जो भी गुण है, वह स्वरूप में दिखाई दे। और जितना स्वरूप में दिखाई देंगे, उतना और आत्माओं को उस स्वरूप से प्राप्ति भी होगी और अपने स्वरूप से उनका connection बाबा से भी होता जाएगा। तो बाबा ने कहा - कुछ नए तरह की सेवा, एक तो आप अपना plan करते हो, पर समय अनुसार, एक उस स्थिति से - फ़रिश्ता स्थिति कहो, न्यारी–प्यारी कहो, शांति, प्रेम, शक्ति - उस स्वरूप से ज़्यादा से ज़्यादा सेवा होगी।

आह्वान कर रहे हैं भक्त कि जो भी देवी–देवताएँ हैं, जो भी पूजनीय हैं, उनके दर्शन करना चाहते हैं। तो आप लोगों को अब अपना प्रत्यक्ष रूप, अपना दैवी रूप प्रगट रखना है और भक्तों को दर्शन कहो, साक्षात्कार कहो और जो आत्माएँ खोज में हैं, उनको मार्ग मिले। तो इस तरह से बाबा के बताया कि वर्तमान समय हम सभी को क्या करना है।

फिर बाबा ने कहा कि दादी जानकी का उदाहरण सामने रखो। और वह उदाहरण क्या है? कि उन्होंने मनसा, वाचा, कर्मणा - तीनों सेवाएँ समान रूप से कीं। तो आप सभी को भी इस समय मनसा, वाचा, कर्मणा - तीनों सेवाएँ इकठ्ठी करनी हैं।

बाबा बच्चों से बात कर रहे हैं और बात करते करते बाबा की दृष्टि से जैसे हम बच्चों का वह संपूर्ण स्वरूप भी Emerge होता जा रहा है। बाबा ने कहा - आप लोगों की भी दृष्टि से अब हर एक को अपनी सम्पन्नता और संपूर्ण स्वरूप का अनुभव होना चाहिए। किसी का संस्कार, किसी की कमजोरी, कुछ भी ना देखते हुए, हर एक के प्रति आपकी दृष्टि से उसको खुद महसूस हो कि यह मेरा संपूर्ण स्वरूप है। जैसे बाबा की दृष्टि से आप सबको अनुभव होता है, आप लोगों की दृष्टि से सबको अनुभव होना चाहिए।

मैंने कहा - बाबा, जयंती बहन और हंसा बहन ने बहुत बहुत यादप्यार दिया। तो बाबा ने और दादी ने - दोनों को बोला - बच्ची, जितना आप लोग याद करते हो, दादी भी, आप लोग साथी रहे, तो बहुत याद करती है। बहुत अच्छा part बजा रही हो दोनों, और part ऐसे बजाते रहो।

हंसा बहन के लिए ख़ास बाबा ने कहा कि बच्ची, बहुत सेवा होगी, कोई और संकल्प नहीं लाओ। स्वरूप बनते जाओ, अपनी दृष्टि से सबकी सेवा करते रहो, ऐसा आपका part भी है। तो जयंती बहन को भी दादी ने हाथ से हाथ मिलाया और दोनों को बहुत बहुत यादप्यार दी।

फिर बाबा और दादी दोनों ने हम सभी को, आप सभी को बहुत बहुत यादप्यार दी और हाथ से सब वरदान..., हर प्रकार की प्राप्ति का हाथ जैसे बाबा ने आशीर्वाद के रूप से दिखाया और ऐसा कहते हुए, फिर दृष्टि से बाबा की याद लेते हुए मैं यहाँ पर वापस आ गई।

ओम शांति।